रेनर मारिया रिल्के

रेनर मारिया रिल्के का जन्म 4 दिसंबर 1875 ई० में प्राग, ऑस्ट्रिया (अब जर्मनी) में हुआ था। इनके पिता का नाम जोसेफ रिल्के और माता का नाम सोफिया था। इनकी शिक्षा-दीक्षा अनेक बाधाओं को पार करते हुए हुई। इन्होंने प्राग और म्यूनिख विश्वविद्यालयों में शिक्षा पायी। कला और साहित्य में आरंभ से ही इनकी गहरी अभिरुचि थी। संगीत, सिनेमा आदि अनेक कलाओं में इनकी गहरी पैठ थी। कविता के अतिरिक्त इन्होंने गद्य भी पर्याप्त लिखा। इनका एक उपन्यास 'द नोटबुक ऑफ माल्टे लॉरिड्स ब्रिज' और 'टेल्स ऑफ आलमाइटी' कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख कविता संकलन हैं - 'लाइफ एण्ड सोंग्स', 'लॉरेंस सेक्रिफाइस', 'एडवेन्ट' आदि। इनका निधन 29 दिसंबर 1926 ई० में हुआ।

रिल्के का रचनात्मक अवदान बहुत बड़ा है। इन्होंने आधुनिक यूरोप के साहित्य को अपने गहरे भावबोध तथा संवेदनात्मक भाषा और शिल्प से काफी प्रभावित किया। इनकी काव्य शैली गीतात्मक है और भावबोध में रहस्योन्मुखता है।

प्रसिद्ध हिंदी कवि **धर्मवीर भारती** द्वारा भाषांतरित इस महान जर्मन कवि की कविता यहाँ प्रस्तुत है। यह कविता विश्व कविता के भाषांतरित संकलन 'देशांतर' से ली गयी है। रिल्के का आधुनिक विश्व कविता पर प्रभाव बताया जाता है। रिल्के मर्मी इसाई कवियों जैसी पवित्र आस्था के आस्तिक कवि थे, जिनकी कविता में रहस्यवाद के आधुनिक स्वर सुने जाते हैं। प्रस्तुत कविता इस तथ्य की एक दुर्लभ साखी पेश करती है। बिना भक्त के भगवान भी एकाकी और निरुपाय हैं। उनकी भगवत्ता भी भक्त की सत्ता पर ही निर्भर करती है। व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं। प्रेम के धरातल पर अत्यंत पावनतापूर्वक यह कविता इस सत्य को अभिव्यक्त करती है।

मेरे बिना तुम प्रभु

जब मेरा अस्तित्व न रहेगा, प्रभु, तब तुम क्या करोगे ?
जब मैं – तुम्हारा जलपात्र, टूटकर बिखर जाऊँगा ?
जब मैं तुम्हारी मदिरा सूख जाऊँगा या स्वादहीन हो जाऊँगा ?

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?

मेरे बिना तुम गृहहीन निर्वासित होगे, स्वागत-विहीन
मैं तुम्हारी पादुका हूँ, मेरे बिना तुम्हारे
चरणों में छाले पड़ जाएँगे, वे भटकेंगे लहूलुहान !

तुम्हारा शानदार लबादा गिर जाएगा
तुम्हारी कृपादृष्टि जो कभी मेरे कपोलों की
नर्म शय्या पर विश्राम करती थी
निराश होकर वह सुख खोजेगी
जो मैं उसे देता था –

दूर की चट्टानों की ठंढी गोद में
सूर्यास्त के रंगों में घुलने का सुख

प्रभु, प्रभु मुझे आशंका होती है
मेरे बिना तुम क्या करोगे ?

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता है ?
2. आशय स्पष्ट कीजिए –

    "मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
    मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?"

3. शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों ?
4. कवि किसको कैसा सुख देता था ?
5. कवि को किस बात की आशंका है ? स्पष्ट कीजिए ।
6. कविता किसके द्वारा किसे संबोधित है ? आप क्या सोचते हैं ?
7. मनुष्य के नश्वर जीवन की महिमा और गौरव का यह कविता कैसे बखान करती है ? स्पष्ट की
8. कविता के आधार पर भक्त और भगवान के बीच के संबंध पर प्रकाश डालिए ।

कविता के आस-पास

1. पुस्तकालय से रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' का हिंदी अनुवाद खोजकर पढ़ें और रिल्के तथा रवीन्
   में समानता के सूत्र खोजिए ।
2. हिंदी में 'रिल्के के पत्र' प्रकाशित हैं । उन्हें पढ़ें ।
3. रिल्के के बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र कीजिए और उसे लेख के रूप में प्रस्तुत की

भाषा की बात

1. कविता से तत्सम शब्दों का चयन करें एवं उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।
2. कविता में प्रयुक्त क्रियाओं का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।
3. कविता से अव्यय पद चुनें ।
4. कविता के विशेष्य पदों को चिह्नित करें ।

शब्द निधि

जलपात्र : पानी रखने का बर्तन
वृत्ति : प्रवृत्ति, कर्म-स्वभाव
निर्वासित : बेघर
पादुका : चप्पल, जूते, खड़ाऊँ आदि
लबादा : चोगा
कपोल : गाल
शय्या : बिस्तर